मेडाड निराला गीत सुनता है

पेद्रो सा मोरायस द्वारा पुनर्लिखित

"रब्बी, हमें एक बार फिर वह कहानी सुनाइए!"

कुछ उत्साही बच्चे रब्बी ज़ेकाराया के घर में अध्ययन-कक्ष में रखी एक मेज़ के चारों तरफ़ इकट्ठा होकर बैठे थे; कमरे में हल्की-हल्की रोशनी थी। रब्बी ज्ञानी थे, और जब अपने समाज के ऐसे छोटे सदस्यों के साथ होते तो उनकी विनोदप्रियता और सौहार्दपूर्ण स्वभाव की झलक मिलती।

"कौन-सी कहानी?" उन्होंने पूछा, उनकी आँखों में एक चमक थी।

"अरे रब्बी, आप तो जानते ही हैं कि हम किस कहानी की बात कर रहे हैं! उस युवा वादक की वही कहानी जो बास नामक वाद्य बजाता था," नन्हे शऊल ने कहा जो स्वयं एक संगीतज्ञ बनना चाहता था।

"अच्छा। *वह* कहानी!"

इन वृद्ध को और किसी भी चीज़ में इतनी ख़ुशी नहीं मिलती थी जितनी कि उन गहन, बोधयुक्त व रहस्यपूर्ण कहानियों को सुनाने में मिलती जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में चली आ रही थीं। ढलती उम्र में भी वे कुशाग्र बुद्धि के धनी थे और आख़िरकार अपने नाम के अर्थ की क़द्र कर पा रहे थे; उनका नाम था 'ज़ेकाराया' यानी 'भगवान को याद रहता है।'

धीरे-से उन्होंने सुनाना शुरू किया। बहुत आदर के साथ उन्होंने कहा, "यह कहानी, मैंने अपने दादा जी से सुनी थी; मेरे दादा जी ने इसे अपने दादा जी से सुना जिन्होंने इस कहानी को घटित होते हुए अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुना और अपने हृदय से महसूस किया था।"

फिर रब्बी ने कहानी सुनाना शुरू किया।

"जिन घटनाओं को मैं सुनाने जा रहा हूँ वे बेसरेबिया क्षेत्र के एक छोटे-से गाँव में घटित हुई थीं। वह गाँव अपने क्लेज़्मर बैन्ड के लिए प्रसिद्ध था जो हर उत्सव और सामाजिक कार्यक्रम की जान था। जैसा कि तुम जानते ही हो, उस समय के कुछ रब्बी क्लेज़्मोरिम यानी स्वच्छन्द संगीतज्ञों को, संगीत व नृत्य की रचना करने वाले कलाकारों को पसन्द नहीं करते थे। लेकिन इस गाँव के रब्बी, रब्बी श्मुएल की सोच कुछ अलग थी। क्लेज़्मर संगीत में जो उत्कण्ठा और शान्ति के भाव थे, उनकी वे सराहना करते थे। उन्हें यह बात भी अच्छी लगती कि अकसर शोरगुल से भरे क्लेज़्मर गीतों की संगीत-रचना और शैली यहूदी मन्दिरों में गाई जाने वाली प्रार्थनाओं से प्ररित होती थी। रब्बी

श्मुएल के अनुसार, ये गीत पावन रीति-रिवाजों और रोज़मर्रा के जीवन को जोड़ने वाले एक संगीतमय सेतु की रचना करते थे।

“यही कारण था कि जब गाँव के बैन्ड ने अपना बास-वादक खो दिया और उसका स्थान लेने के लिए कोई अन्य संगीतज्ञ दिखाई नहीं दे रहा था तब रब्बी खुद किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करने लगे जो उस वाद्ययन्त्र को बजाना सीखे और कालान्तर में बैन्ड में बास-वादक का स्थान ले सके। उन्हें जो व्यक्ति मिला उसका नाम था, मेडाड जो शान्त स्वभाव का युवक था और देखने में अन्तर्मुखी व सौम्य दिखाई देता था। ऐसा देखा गया था कि दिन का अपना काम करते हुए वह लगातार अपने में ही गुनगुनाता रहता, धीमे स्वर में गाता रहता। *इस लड़के को संगीत इतना पसन्द है—यह वाक़ई जल्दी सीख जाएगा,* रब्बी ने सोचा।”

तभी, नन्हा शऊल बीच में बोल पड़ा, उसने असमंजस भरी दृष्टि से देखते हुए पूछा, “लेकिन रब्बी, बास तो कितना कठिन वाद्ययन्त्र है। उसमें निपुणता हासिल करने में तो सालों लग जाते हैं।”

“हाँ यह सच है, मेरे नन्हे दोस्त,” आदरणीय कहानीकार ने सहनशीलता से जवाब दिया, “परन्तु जैसे ही मेडाड ने वाद्ययन्त्र पर अपना हाथ रखा, वह बहुत उल्लसित हो उठा। वह अभ्यास करता रहा, अभ्यास करता रहा, इतने उत्साह के साथ अभ्यास करता रहा कि सरल-सी धुनें और संगीतशैलियाँ वह बहुत ही जल्दी सीख गया। कुछ ही समय में वह बैन्ड के अन्य सदस्यों के साथ रिहर्सल यानी अभ्यास-सत्रों में भाग लेने लगा और छोटे कार्यक्रमों में बजाने भी लगा।”

रब्बी ज़ेकाराया ने आगे कहा।

“उस युवक के शालीन व्यवहार ने और अपने वाद्ययन्त्र के प्रति उसके गहन समर्पण ने बैन्ड के संगीतज्ञों के दिल को छू लिया। वे विशेष प्रयत्न करके उसकी मदद करते ताकि वह और भी बेहतर सीख सके और उसे घर जैसा अपनेपन का माहौल महसूस हो। कभी-कभी तो मेडाड अपने संगीत के सुरों में इतनी गहराई से रम जाता कि वह अपने अन्तर-जगत में खो जाता। यह दृश्य देखने लायक़ होता! ‘मेडाड’ नाम का अर्थ है ‘प्रिय,’ और वह तो प्रेम का मूर्तरूप ही था—उसकी आँखें आधी मुँदी होतीं, उसका शरीर झूम रहा होता, चेहरे पर एक स्वाभाविक मुस्कान खेल रही होती। गाँववासी बैन्ड के चारों ओर इकट्ठा होकर तालियाँ बजाने लगते, इस युवा बास-वादक के विशुद्ध आनन्द से वे उत्साह से सराबोर हो जाते।

“अभ्यास के साथ-साथ मेडाड के वादन में निखार आता गया। वह बेहतर-से-बेहतर संगीतज्ञ बनता गया। फिर भी, एक ऐसा क्षण ज़रूर होता जब ऐसा लगता कि उसकी लय या उसके सुर

बाकी के बैन्ड से अलग जा रहे हैं। परन्तु मेडाड इतनी तल्लीनता से अपनी धुन बजाने में डूबा होता कि किसीका भी मन नहीं होता कि उसके ग़लत सुरों को सुधारे।

“गाँव के बैन्ड में औपचारिक रूप से बास-वादक के रूप में शामिल हुए उसे दो महीनों से थोड़ा अधिक समय ही हुआ था जब एक बड़े उत्सव का आयोजन हुआ। वह था, रब्बी के सबसे बड़े बेटे और एक धनवान व्यापारी की बेटी का विवाह समारोह। कई सारे अलग-अलग गाँवों से मित्र और सम्बन्धी इस उत्सव में शरीक होने आ रहे थे जिसका उन्हें काफ़ी लम्बे समय से इन्तज़ार था। बेटी के परिवार ने एक बड़ा-सा पण्डाल लगाया था और एक विशेष मंच तैयार किया था जिस पर बैन्ड मन्त्रमुग्ध करने वाले सुर, मस्तानी धुनें बजाने वाला था और लोग घण्टों तक उस संगीत पर नृत्य करने वाले थे।

“अब तक बैन्ड के अन्य संगीतज्ञ मेडाड की इस तल्लीनता को शान्ति से सहते आए थे, बल्कि यह उन्हें पसन्द भी थी। परन्तु उन्हें लगा कि ऐसा शानदार कार्यक्रम ही वह अवसर है जब वह बैन्ड का सदस्य होने की अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना सीख सकता है। इसलिए उन्होंने एक मज़ाक के ज़रिए उसे यह संगीत-शिक्षा देने का निर्णय लिया। उन्होंने तय किया कि अगली बार जब वे देखेंगे कि वह समूह के सुर से भटककर कोई और ही धुन बजा रहा है तब एक-एक करके वे बजाना बन्द कर देंगे और फिर जो अजीब-सी चुप्पी छा जाएगी उससे मेडाड ऐसा सबक़ सीखेगा जिसे वह कभी नहीं भूल पाएगा।

“उत्सव शुरू हुआ, बैन्ड के सभी सदस्य बढ़िया वादन कर रहे थे। महफ़िल के गीत दिल को छू लेने वाले थे—दूल्हा-दुल्हन को मुबारकबाद देते गीत और सभी की ओर से नई-नवेली जोड़ी के लिए आशीर्वादों को अभिव्यक्त करते स्वर। लगभग दो घण्टों बाद संगीतज्ञों ने देखा कि बास के सुर दूसरी ही दिशा में भटकने लगे हैं। पहले तो यह बेसुरापन स्पष्टता से पता नहीं चला, पर बाद में यह साफ़-साफ़ सुनाई देने लगा। संगीतज्ञों ने मेडाड की ओर देखा, और हाँ बिलकुल, वह उसी मुद्रा में खड़ा था, आँखें आधी बन्द थीं और चेहरे पर खिलखिलाती बड़ी-सी मुस्कान छाई थी। तो जैसा कि उन्होंने तय किया था, एक-एक करके बैन्ड के हरेक सदस्य ने बजाना बन्द कर दिया—पहले वायलिन-वादक ने बन्द किया, फिर शहनाई-वादक ने, फिर बाँसुरी-वादक, तबला-वादक . . . और फिर अन्त में, केवल मेडाड ही बजाने वाला रह गया। विवाह में आए अतिथियों ने यह देखा, सभी समझ गए कि यह मज़ाक़ किया जा रहा है, बस मेडाड को छोड़कर, जिसकी आँखें अब थोड़ी और खुली हुई थीं, और वह पण्डाल के ऊपर की ओर देखते हुए बजाता जा रहा था, उसकी उँगलियाँ पूरे विश्वास और दृढ़ता के साथ वाद्ययन्त्र पर चलती जा रही थीं।

“कुछ मेहमान हँसने लगे पर जल्द ही उन्होंने ख़ुद को रोक लिया क्योंकि रब्बी के हँसने से पहले हँसना उनका अपमान होगा। रब्बी नहीं हँसे। रब्बी श्मुएल जो मंच के नज़दीक एक कुर्सी पर बैठे थे, वे मेडाड की ओर एकटक देख रहे थे। हर कोई चुपचाप खड़ा था, मेडाड को बजाता हुआ देख रहा था। और वह इतने जोश व तल्लीनता के साथ बजाता जा रहा था कि ऐसा लगने लगा कि उसके संगीत के प्रत्युत्तर में हवा तेज़ी-से बहने लगी है।”

यहाँ पर हमारे कहानीकार, रब्बी ज़ेकाराया रुक गए और उन्होंने अपने चाय के कप से एक चुसकी ली। बच्चे इतने ध्यान से सुन रहे हैं, इस बात का आनन्द लेते हुए वे मुस्कराए। फिर उन्होंने आगे कहा, “दरअसल, बात ऐसी थी कि हवा सचमुच ही तेज़ी-से बहने लगी थी।

“तेज़, और तेज़ . . . इतनी तेज़ बहने लगी कि पण्डाल के गड़े हुए खूँटे एक-एक करके ढीले होने लगे और फिर हवा के साथ पण्डाल की छत उड़ गई। वहाँ बैठे मेहमानों को अब, ऊपर वह अद्भुत, ख़ूबसूरत, गहरा-नीला आकाश दिखाई दिया जिसमें अनगिनत टिमटिमाते सितारे बिखरे थे। और उन सितारों से मख़मली नीली रोशनी, विवाह-मण्डप पर उतर रही थी।

“तेज़ हवा धीरे-धीरे शान्त होने लगी, मेडाड अपना बास बजाता रहा। उसे अपने आस-पास की किसी भी चीज़ का भान न था। तभी एक व्यक्ति, फिर दूसरा व्यक्ति और फिर थोड़ी ही देर में वहाँ मौजूद सभी लोगों को यह एहसास होने लगा कि मेडाड का बास ही अकेला वाद्य नहीं था जो उन्हें सुनाई दे रहा है। मंजीरे की हल्की-हल्की खनक भी थी; घण्टों का सुरीला नाद था; ढोल की मृदुल थाप थी; वहाँ अलौकिक स्वर थे। और ये ध्वनियाँ मधुरातिमधुर संगीत की रचना कर रही थीं, गा रही थीं; ऐसा संगीत जो अन्य किसी भी संगीत से अधिक मन्त्रमुग्ध करने वाला था, ऐसा संगीत जिसे आज तक किसी ने भी सुना न था। मेडाड के वादन के सभी सुर, बल्कि हरेक एक सुर, उन स्वर्गीय ध्वनियों के साथ पूर्ण रूप से एकलय था। वहाँ उपस्थित हरेक व्यक्ति उस युवा बास-वादक और उन अदृश्य संगीतज्ञों के अलौकिक संगीत में डूब गया था, जिन संगीतज्ञों को केवल फ़रिश्ते ही कहा जा सकता है।

“वह संगीत, वहाँ उपस्थित हर किसी को उनके अपने हृदय की गहन शान्ति में ले गया, इस बोध में ले गया कि जीवन पावन है।

“समयातीत-से प्रतीत होने वाले कुछ समय के बाद, मेहमान अपनी आँखें खोलने लगे और प्रार्थना से सिक्त मौन के स्थान से बाहर आने लगे। उन्होंने आस-पास, एक-दूसरे को देखा; उनकी दृष्टि में एक स्वीकृति झलक रही थी, मानो वे एक-दूसरे से पूछ रहे हों *क्या तुमने वही देखा जो मैंने देखा? क्या तुमने वही सुना जो मैंने सुना? क्या तुमने वही महसूस किया जो मैंने किया?*

“और वहीं पर थे रब्बी श्मुएल, दूल्हे के पिता, संगीतज्ञों के मंच पर घुटनों के बल बैठे थे। वे ज़मीन पर उलटे लेटे उस युवक को एकटक देख रहे थे, मेहमानों ने तुरन्त ही पहचान लिया कि वह मेडाड है। रब्बी की आँखें भर आईं। मेडाड को देखने वालों को एकाएक यह एहसास हुआ कि वह अब उनके साथ इस भूलोक में नहीं है। लोगों ने आँखें ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखा। कुछ बादल घिर आए थे, पर फिर भी उस रात्रि का आकाश इतना ख़ूबसूरत था कि जैसा उन्होंने कभी देखा न था।

“रब्बी श्मुएल ने मृदु स्वर में कहा, ‘मित्रो, भगवान ने हमारे युवा संगीतज्ञ को स्वर्गिक बैन्ड में, स्वर्ग की संगीत-मण्डली में शामिल होने के लिए बुला लिया है।’

“इसके आगे उन्हें कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं थी। उस क्षण सभी समझ गए कि भले ही मेडाड उनके बीच रह रहा था परन्तु वह सदैव ही भगवान के संगीत को सुनता और बजाता रहा था। उसकी सिर्फ़ एक ही ललक थी, भगवान के साथ होने की ललक, और भगवान ने उसके प्रेम का प्रत्युत्तर दिया था।”

जब रब्बी ज़ेकाराया ने कहानी सुनाना समाप्त किया, तब उनके अध्ययन-कक्ष में शान्ति छा गई। अकसर चुलबुले-से, हिलते-डुलते और बोलते रहने वाले नन्हे बच्चे, गहरी प्रशान्ति में डूब चुके थे।

कुछ समय बाद, नन्हे उभरते संगीतज्ञ, शऊल ने चुप्पी तोड़ी :

“रब्बी, यह पूछने के लिए मुझे माफ़ कीजिए पर आपको कैसे पता कि यह सचमुच हुआ था? आपको कैसे पता कि यह कोई सुनी-सुनाई दन्तकथा नहीं है?”

समझदार रब्बी ज़ेकाराया ने प्यार-से मुस्कराते हुए जवाब दिया। “तुम्हारा नाम है, शऊल और तुममें अपने नाम के ही गुण हैं? इसका अर्थ है ‘सवाल पूछना।’” वे दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्करा दिए।

“मैं भी ऐसे ही सवाल पूछा करता था,” रब्बी ने आगे कहा। “समय के साथ मैं इन पुरानी कहानियों की विशिष्टता को समझ गया। ये हमें अपनी अन्तर-इन्द्रियों से जुड़ने में मदद करती हैं और उसे पहचानने में मदद करती हैं जो हमारी आँखों और कानों से परे है। फिर, ऐसे क्षणों में जब गहन मौन छा जाता है, तब हमें भी मंजीरे की हल्की खनक सुनाई दे सकती है।”

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।